UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९२ • मार्च २०२४ • पुरवणी विशेषांक ०८

उत्सव

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ८ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ८

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- प्राचार्य डॉ. के. एच. शिंदे
- डॉ. एस. व्ही. पणदे
- डॉ. बी. एम. मगदूम

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/–
वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/–, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/–

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

७३. चंदगड तालुक्यातील शेतमजुरांचा आर्थिक अभ्यास
– डॉ. के. पी. वाघमारे ---------- ३१०

७४. जिरायती व बागायती शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या प्रवृत्तीचा तुलनात्मक अभ्यास
– प्रा. सविता रामचंद्र रेवडे ---------- ३१५

७५. कृष्णा सोबती के साहित्य में शोषित एवं उपेक्षित नारी
– डॉ. कदम संदिप तानाजी ---------- ३१७

७६. गोंड आदिवासी जमाती के प्रमुख और समाजक्रांती के प्रणेता – "बिरसामुंडा"
– आशा बुधराम मडावी ---------- ३२०

७७. दूधनाथ सिंह तथा ज्ञानरंजन की कहानियों में नारी विमर्श
– श्रीमती. ज्योती एकनाथ गायकवाड ---------- ३२२

७८. "हिंदी कथा–साहित्य : नारी विमर्श"
– लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील ---------- ३२७

७९. 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी आंदोलन
– डॉ. श्रीकांत पाटील ---------- ३३०

८०. सर्वेश्वर द्याल सक्सेना के काव्य में सामाजिक मूल्य विघटन
– डॉ. भोसले काकासाहेब बापूसाहेब ---------- ३३४

८१. आत्मकथाओं में चित्रित दलित चेतना
– श्रीमती खुडे शुभांगी मनोहर ---------- ३३८

८२. स्त्री वेदना और विद्रोह की कहानी : 'नगाड़े की तरह बजते है शब्द'
– डॉ. युवराज माने ---------- ३४१

८३. भारतीय दलित आंदोलन और हिंदी साहित्य
– प्रा. डॉ. संजय य. चोपडे ---------- ३४४

▲▲▲

सर्वेश्वर द्याल सक्सेना के काव्य में सामाजिक मूल्य विघटन

डॉ. भोसले काकासाहेब बापूसाहेब
एम. ए., एम. फिल, पी. एच.डी., विषय - हिंदी
डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय,
रामानंदनगर (बुर्ली) 416308
E-mail: bhosalekakasaheb7@gmail.com
मो. नं- 9422674279

सारांश :

समाजिक मूल्य -विघटन की त्रासदी का अंकन सर्वेश्वर की कविता में हुआ है। वर्तमान परिवेश में मानवीय एवं सामाजिक मूल्यो मे बदलाव देखकर कवि बेचैन हो उठते हैं और मानवीय मूल्यों के स्वस्थ विकास की कामना भी करते है। वे देखते हैं कि वर्तमान जीवन की यही उपलब्धि है कि मनुष्य ने अपनी शक्ति खो दी है, प्रेम विस्मृत कर दिया है, करूणा स्वार्थ से पराजित हो गई है और मनुष्य आस्थाहीन होता जा रहा है। फलस्वरूप एक बन्द समाज का दर्द सब कहीं व्याप्त है।
किसी भी कवि की सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण आधार है समसामयिकता एवं यथार्थ की पहचान । सामयिक सामाजिक यथार्थ के आकलन एवं विश्लेषण से व्यक्ती के साथ संपूर्ण समाज के संवेदनात्मक उद्देश्य तक पहुँचने का लक्ष्य कवि बनाते हैं। सामाजिक संवेदनात्मक कवि जागृत होते हैं। वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की गहरी पहचान रखते है। सर्वेश्वरजी ने समसामयिक यथार्थ, जीवन-मूल्य, युगीन राजनीति एवं साक्षात्कार का, कविता में सर्जनात्मक उपयोग कर समाज में शांति एवं विकास की दृष्टि से सोचकर काव्य का निर्माण किया है। सामाजिक यथार्थ दृष्टि रखनेवाले सर्वेश्वर समसामायिक कटू जीवन यथार्थ और समस्याओं का साक्षात्कार न करते हुए उनके प्रति संघर्ष भाव का परिचय देकर व्यक्ति एवं समाज के विकास की कामना करते हैं। कवि सर्वेश्वर सामाजिक यथार्थ दृष्टि के सम्पन्न कवि है। इसलिए सामाजिक धरातल पर नवीन मूल्यों भी स्थापना कर स्वस्थ समाज की कामना करते है ।

कुँजी शब्द - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में उर्दू, तत्सम / तद् भव, फारसी, अँगेजी, ब्रज और लोकजीवन के शब्द मिलते है । अर्थात - यात्रा, अनवरत, सुत्रधार, लोकजीवन के शब्द = भीड, गहा, मूर्खता, नीचता, कायरता, एक गाय, भूखे से भरी ठठरी, खुँटे, धक्का आदि ।

उर्दू और फारसी के शब्द - बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ कविताओं मे अधितर शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

प्रास्ताविक

आजादी के पश्चात. भारतीयों को विश्वासघात का अनुभव हुआ है । हर भारतीय आशावादी था परंतु मूल्यहीनता एवं मोहभंग की स्थितियाँ उभरकर दिखाई देने लगी। आदमी कुण्ठा, निराशा, निष्क्रिय मानसिकता आदि से स्वयं को बचाने में असमर्थ हो गया। राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रभाव से सामाजिक दर्द का अनुभव हुआ । सामाजिक जडता से ग्रस्त मूल्यविघटन की स्थिति का अंकन सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में हुआ है। सक्सेना जी एक ओर स्वातंत्र्योत्तर जर्जर सामाजिक मूल्यों को सामने रखते तो दूसरी ओर यथार्थवादी सामाजिक धरातल पर नवीन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की अदम्य लालसा प्रकट करते हुए स्वस्थ, विकसनशील, शांतियुक्त समाज की स्थापना करना चाहते है।

अकेलापन और अजनबीपन का बोध

कवि की दृष्टि से भाईचारा, परस्पर प्रेम, सदभावनाएं, आदि का ऱ्हास हुआ है। व्यक्ति-व्यक्ति के मन में मूर्खता, कायरता और नीचता के कारण अकेलापन और अजनबीपन का बोध होने लगा। कवि की मानसिक चिन्ता निम्न पंक्तियो मे व्यक्त हो जाती है -

भीड में अकेला यदि खा रहा
सब अपनी राह गए
कोई मेरे लिए नहीं रूका
किसी ने हाथ नहीं गहा।[1]

इस संबंध में रमेश ऋषीकल्प लिखते है - पहले व्यक्ति अकेले त्रासदी झेलता था आज पूरा समाज उसे झेलता है। आज यंत्रणा और मृत्यू का स्थान व्यथा, पीडा और कलाकार के आत्मसंघर्ष ने ले लिया है। नई दुनिया से ईश्वर और मनुष्य दोनों का गौरव विदा हो गया और बदले में फूहडतां और विडम्बना पैदा हुई। [2]

ISSN No. 2394-5990

सक्सेना जी भी यही अहसासं करतें हुए कविता मे लिखते है –

आस्था के नाम पर मूर्खता
विवेक के नाम पर कायरता
सफलता के नाम पर नीचता
मुहर की तरह हर व्यक्ति पर लगी हुई है ।[3]

शक्ति, प्रेम, करूणा और आस्था

डॉ हरिचरण शर्मा सक्सेना के शक्ति, प्रेम, करूणा और आस्था के संबंध मे लिखते है कि वर्तमान जीवन की उपलब्धि है कि कवि का अभिप्रेत यह बतलाना है कि वर्तमान जीवन की उपलब्धि है कि मनुष्य ने अपनी शक्ति खो दी है, प्रेम विस्मृत कर दिया है, करूणा स्वार्थ से पराजित हो गई है और मनुष्य आस्थाहीन हो गया है । फलतः टूट रहा है।[4]

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के मन में मानवीय करूणा, प्रेम और इन्सानियत का भाव भरा है। बाहर की दुनिया खोखली, मुखोटा लगायी है। हर कदम हर क्षण होनेवाले आंतरिक मूल्यों के दफन के बारे में सोचकर कहते है –

यह कायरों का देश है
यहाँ लोग देखने को आगे देखते है
चलने पर पीछे चलते है
घूनी लकडियों क धनुष बनाते है
और विवेक के नाम पर
प्रत्यंचा चढाने से मना करते है ।[5]

मानवीय मूल्यों का विघटन :

स्वतंत्रता के बाद भारत में एक ओर मानवीय मूल्यों का विघटन हुआ तो दूसरी ओर नैतिकता के नाम पर अनैतिकता को आश्रय मिलने लगा। इस परिस्थिति को मध्य नजर रखते हुए सर्वेश्वर जी कहते है कि व्यक्ति पर व्यक्ति का विश्वास नहीं रहा। मानव इन्सानियत और नैतिकता से आस्था खो चुका है। प्यार, ममता एवं करूणा मानवीयता का हनन हो रहा है। सामाजिक स्तर पर नौतिकता के प्रति ध्यान आकृष्ट कर कवि कहते है –

आदमी की करूणा के नाम पर
एक गाय, अपने बच्चे की भूसे से भरी ठठरी चाटती
खूँटे से बँधी उसका पेट पालती–पालती
कल चल बसी। [6]

नैतिकता, प्रेम एवं सौहार्द की भावना –

संसार में सामान्य आदमी संकट में है। समझदार आदमी दूसरों को संकट में डाल रहा है। समाज में नैतिकता, प्रेम एवं सौहार्द की भावना समाप्त होती जा रही है। मानव मन धीरे–धीरे संकुचित बनता रहा है। कवि कहते है –

इस दुनिया में
जो जितनी यातना देने में समर्थ है
वह उतना ही समझदार है ।[7]

वर्तमान जीवन में इन्सानियत, करूणा और प्रेम जैसे आन्तरिक मूल्य झूठे और नकली दिखाई दे रहे है। इस स्थिति से कवि दुःखी बनकर पिता की मत्यू के बारे मे लिखते है –

धक्का देकर किसी को
आगे जाना पाप है ।
अतः तुम भीड से अलग हो गए ।
महत्वकांक्षा ही सब दूखों का मूल है
इसलिए तुम जहाँ थे वहीं बैठ गए ।
संतोष परम धन है
मानकर तुमने सबकुछ लुट जाने दिया।
पिता ! इन मूल्यों ने तो तुम्हें
अनाथ, निराश्रित और विपन्न ही बनाया।[8]

मूल्यहीनता

कवि सर्वेश्वर मूल्यहीनता की स्थिति से यथार्थ को एक–एक पंक्ति में व्यक्त करते है। मूल्य ऱ्हास की दुनिया ने आदमी को अनाथ एवं अकेला बनाने के साथ ही निराश्रित बना दिया है। कवि कहते है –

तुम ने जितना ही अपने को अर्थ दिया
दूसरों ने उतना ही तुम्हें अर्थहीन समझा।[9]

डॉ सुभद्रा पैठणकर 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्यः ह्युगीन संदर्भ' में लिखती है मनुष्य की चेतना को झकझोरने वाले मानव मूल्यों को विघटित करनेवाले तत्व अनेक है। बेकारी, महँगाई, अकाल, बाढ, साम्प्रदायिकता, जातिवाद और नेताई कुर्सी का मोह इनमें प्रमुख है। आज जीवन में अराजकता व शून्यता के रक्तबीज फल–फूल रहे है, जीवन विसंगतियों से भरपूर हैं। व्यक्ति अपने अस्तित्व की खोज के लिए कुलबुलाता है, हडबडाता है, पुराने मूल्यों को वह अस्वीकार करता है और नए मूल्यों को अपनाना चाहता है, पर असामाजिक तत्वों के कारण पारिवेशिक घुटन को झेलता हुआ जी रहा है ।..... सामाजिक मूल्यों को आज व्यक्ति नकारता है।10

खोखला नाटक

आज मानव जीवन इस संसार रूपी रंगमंच पर खेले जानेवाला खोखला नाटक बना है । कवि ड्रनाटकफ कविता में इसे स्पष्ट करते हैं –

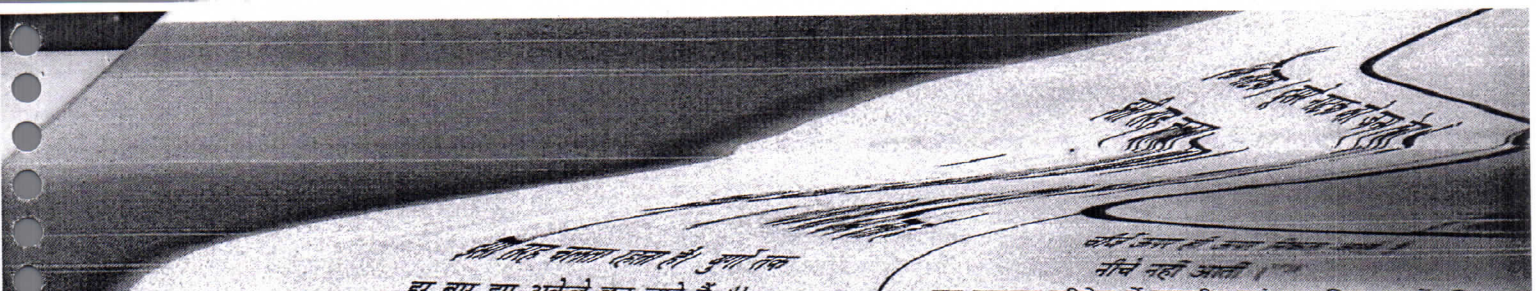

[illegible]

हर बार हम अकेले छूट जाते हैं ।[11]

डॉ संन्तोष कुमार तिवारी के शब्दों मे – "सर्वेश्वर का कवि जिंदगी को सडा– फटता कपडा मानकर पैबंदो की दुनिया में जीकर थर्राता है। तिरस्कार भरी दुनियाने अविश्वास और आशंकाओं में हमें घेरे हैं। लोग पहचान कर भी नहीं पहचानते। यह व्यक्तिगत जिन्दगी का नहीं, समाजिक जिन्दगी का इजहार है, कडुआ सच और यथार्थ ।"[12]

मूल्य विघटन की स्थिति

सर्वेश्वर जी 'तर्कयोग' कविता में मूल्य विघटन की स्थिति पर व्यंग्य के सहारे प्रहार करते हैं –

"इस गली का दूकानदार बेईमान है
उस गली का दूकानदार बेईमान है
क्या इसी से दोनो गलियाँ एक हो जाएँगी
और हमारे– तुम्हारे रास्ते एक हो जाएँगे ।"[13]

सामाजिक और राजनीतिक विसंगातियों

कवि 'सरकंडे की गाडी' कविता में सामाजिक और राजनीतिक विसंगातियों से उत्पन्न मूल्य पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

"अपनी आँख बदलों
सौंदर्य ही सौंदर्य है,
अपने विचार बदलो
सत्य ही सत्य है
अपनी अनुभूति बदलों
शिव ही शिव है ।"[14]

वर्तमान युग की वास्तविकता कवि 'पुस्किन और आज का कवि' कविता मे स्पष्ट करते है –

"विचारधाराएँ स्वार्थ से जुड गई है
शब्द जिंदगी से अलग होते जा रहे है ।"[15]

'दो नेक सलाहें कविता में कवि जीवनगत विसंगतियों एवं मूल्यक्षय की स्थितियों पर दृष्टि डालते हुए कहते है –

"सामर्थ्य –आज स्वयं कर्म करने का नहीं
दूसरों को अकर्मण्य बनाने का नाम है।"[16]

वर्तमान युग में मूल्य विघटनं की बनी हुई त्रासदी को अभिव्यक्त करते हुए कवि कहते है –

"क्या हमारी लाश को भी
नाटकी पोशाक पहनकर नचाओगे ।"[17]

कभी कभी उन्हें ऐसा भी लगता है –

"धरती का आकर्षण टूट गया है
[illegible]
नीचे नहीं आती ।"[18]

इस व्यापक परिवेश में मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों की अस्विकृति को देखकर कवि आहत होकर कहते हैं

"जिसमें जितना रस होता हैं
वह उतना ही निःशब्द टूटता है ।"[19]

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप मे कहा जाता है हि कवि सर्वेश्वर ने अपनी कविता में जीवन के विभिन्न पक्षों को समग्र रूप में अभिव्यक्ति दी है। कवि की कविताओं में सामाजिक समस्याओं के प्रति आधुनिकता की दृष्टि दिखाई पडती है । ये कविताएँ युग की विषमता एवं विश्रृंखलता को अभिव्यक्ति देने के साथ–साथ एक नए युग की आशा एवं आकांक्षा को भी ध्वनित करती है। कवि प्रखर अस्तित्वबोध, मूल्य–विघटन के बीच आस्था एवं जिजीविशा का प्रतिपादन करता है । संघर्षशील मानव एवं मानवता के प्रति उनका विश्वास विषमताओं से जूझने की प्रेरणा देता है । आस्था एवं विश्वास का स्वर सर्वेश्वर की कविता का मूल संवदेना है । कवि की आस्था जीवन–यथार्थ को नए सार्थक रूप में व्यक्त करती है और साथ ही हमें यह दृष्टि भी प्रदान करती है कि जीवन एवं उसके अंतर्विरोधों को हम सही मायने मं देख सके । जीवन के प्रति कवि का सकारात्मक दृष्टिकोण निश्चय ही पाठकों को एक नई आस्था, कर्मठता, संकल्प, एवं जिजीविषा से अनुप्राणित करता है । वस्तुतः कवि सर्वेश्वर की कविता संघर्षरत मनुष्य एवं उससे भी आगे सम्पूर्ण समाज से प्रतिबध्द कविता है जिसे समकालीन कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

संदर्भ सूचि

1 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल ,धूप की लपेट , बाँस का पूल, पृष्ठ 61

2 डॉ. ऋषिकल्प, रमेश , नई कविता और सर्वेश्वर, पृष्ठ 26

3 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, कविताएँ दो, , पृष्ठ 46

4 डॉ. शर्मा ,हरिचरण , सर्वेश्वर का काव्य : संवेदना और संप्रेषण, पृष्ठ 46

5 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 75

6 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 63

7 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 63

8 सक्सेना सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 67–68

9 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 68

ISSN No. 2394-5990

10 डॉ. पैठणकर, सुभद्रा , स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य:युगीन संदर्भ , पृष्ठ 294

11 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, खुँटियों पर टंगे लोग, पृष्ठ 111

12 डॉ. तिवारी, संतोष कुमार , नए कवि : एक अध्ययन, पृष्ठ 228

13 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, कविताएँ दो, पृष्ठ 77

14 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, काठ की घटियाँ, पृष्ठ 119-120

15 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, धूप की लपेट, पृष्ठ 63

16 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, काठ की घटियाँ, पृष्ठ 130

17 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, काठ की घटियाँ, पृष्ठ 134

18 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 61

19 सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, पृष्ठ 75

संदर्भग्रंथ

आधार ग्रंथ –

1. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल – कविताएँ दो (सूनी नाव , गर्म हवाएँ) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
2. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल – काठ की घटियाँ , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
3. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, खुँटियों पर टंगे लोग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982
4. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, धूप की लपेट, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2000
5. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, बाँस का पूल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. ऋषिकल्प, रमेश , नई कविता और सर्वेश्वर, भाषा प्रकाशन नई दिल्ली, 1979
2. डॉ. तिवारी, संतोष कुमार , नए कवि : एक अध्ययन, भारतीय ग्रंथ निकेतन , नई दिल्ली,1991
3. डॉ. शर्मा ,हरिचरण , सर्वेश्वर का काव्य : संवेदना और संप्रेषण, पंचशील प्रकाशन, जयपुर , 1980
4. डॉ. पैठणकर, सुभद्रा , स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य:युगीन संदर्भ, विद्या विकार, कानपुर , 1988

■■■